

IMPORTANT QUESTIONS FOR EXAM

MUST WATCH TO REVISE ALL THE TOPICS IN EASY WAY

Discuss different peaceful methods of resistance and protest.

प्रतिरोध और विरोध प्रदर्शन के विभिन्न शांतिपूर्ण विधियों की चर्चा कीजिए।

Peaceful Methods of Resistance and Protest are non-violent ways people use to express their disagreement with a government, policy, or social issue. These methods aim to bring about change without causing harm or violence. They can be powerful tools for social, political, or environmental change.

1. Non-Violent Demonstrations and Marches

Protests such as marches, rallies, and sit-ins are common methods of peaceful resistance. People gather in public spaces to show solidarity, raise awareness, and demand change. These demonstrations often involve holding placards, chanting slogans, and peacefully walking together.

1. अहिंसक प्रदर्शन और मार्च

प्रदर्शन जैसे मार्च, रैलियाँ और बैठकों को शांतिपूर्ण प्रतिरोध की सामान्य विधियाँ माना जाता है। लोग सार्वजनिक स्थानों पर एकजुट होने, जागरूकता फैलाने और बदलाव की मांग करने के लिए इकट्ठा होते हैं। इन प्रदर्शनों में अक्सर तख्तियाँ पकड़ी जाती हैं, नारे लगाए जाते हैं और शांति से एक साथ चलने का आयोजन होता है।

2. Strikes and Boycotts

Workers may go on strike to stop work in order to protest unfair conditions or policies. Similarly, **boycotting** is when people refuse to buy or use products or services from companies or countries that they believe are engaging in harmful activities or unethical behavior.

2. हड़तालें और बहिष्कार

कर्मचारी अनैतिक परिस्थितियों या नीतियों के खिलाफ विरोध करने के लिए काम छोड़ सकते हैं। इसी तरह, **बहिष्कार** तब होता है जब लोग उन कंपनियों या देशों से उत्पादों या सेवाओं को खरीदने या उपयोग करने से मना करते हैं जिन्हें वे हानिकारक गतिविधियों या अनैतिक व्यवहार में शामिल मानते हैं।

3. Civil Disobedience

Civil disobedience involves deliberately breaking laws that are considered unjust. The goal is to challenge those laws in a peaceful manner. Famous examples include Mahatma Gandhi's

Salt March and Martin Luther King Jr.'s campaigns during the Civil Rights Movement in the United States.

3. नागरिक अवज्ञा

नागरिक अवज्ञा में उन कानूनों को जानबूझकर तोड़ा जाता है जिन्हें अन्यायपूर्ण माना जाता है। इसका उद्देश्य उन कानूनों को शांतिपूर्वक चुनौती देना है। प्रसिद्ध उदाहरणों में महात्मा गांधी का नमक सत्याग्रह और मार्टिन लूथर किंग जूनियर का नागरिक अधिकार आंदोलन के दौरान किए गए अभियान शामिल हैं।

4. Art and Creative Expression

Art, music, and literature can be powerful forms of protest. Protest songs, graffiti, poetry, and paintings convey messages of resistance and raise awareness. They inspire people, spread ideas, and can spark social movements without causing harm.

4. कला और रचनात्मक अभिव्यक्ति

कला, संगीत और साहित्य विरोध के शक्तिशाली रूप हो सकते हैं। विरोध गीत, चित्रकला, कविता और चित्रण प्रतिरोध के संदेशों को व्यक्त करते हैं और जागरूकता फैलाते हैं। वे लोगों को प्रेरित करते हैं, विचारों को फैलाते हैं और बिना किसी हिंसा के सामाजिक आंदोलनों को उत्पन्न कर सकते हैं।

5. Petitions and Advocacy

Petitions are formal requests, often signed by many people, asking for changes in government policies, laws, or practices. Advocacy involves campaigning for a cause, often by raising awareness, meeting with policymakers, and gathering public support. Both are peaceful ways to seek change through organized efforts.

5. याचिकाएँ और समर्थन

याचिकाएँ औपचारिक अनुरोध होती हैं, जिन्हें अक्सर कई लोग हस्ताक्षर करते हैं, जो सरकार की नीतियों, कानूनों या प्रथाओं में बदलाव की मांग करती हैं। समर्थन में किसी कारण के लिए अभियान चलाना शामिल होता है, जिसमें जागरूकता फैलाना, नीति निर्माताओं से मिलना और सार्वजनिक समर्थन जुटाना शामिल होता है। ये दोनों संगठित प्रयासों के माध्यम से बदलाव प्राप्त करने के शांतिपूर्ण तरीके हैं।

6. Non-Violent Blockades

Blockades involve peacefully blocking roads, buildings, or other spaces to prevent access to resources or services. This can draw attention to a cause and force authorities to negotiate or address the issue. The key is to do this in a way that does not harm anyone.

6. अहिंसक अवरोध

अवरोधों में सड़कों, इमारतों या अन्य स्थानों को शांति से बंद कर देना शामिल है ताकि संसाधनों या सेवाओं तक पहुँच रोकी जा सके। यह एक कारण पर ध्यान आकर्षित कर सकता है और अधिकारियों को बातचीत करने या मुद्दे को हल करने के लिए मजबूर कर सकता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे इस तरह से किया जाए जिससे किसी को कोई नुकसान न हो।

7. Online Activism and Social Media Campaigns

With the rise of the internet, online activism has become a major form of peaceful protest. Social media platforms are used to spread information, raise awareness, and organize

campaigns. Hashtags, viral posts, and online petitions help to engage people and create global movements.

7. ऑनलाइन सक्रियता और सोशल मीडिया अभियान

इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ, ऑनलाइन सक्रियता एक प्रमुख शांतिपूर्ण विरोध का रूप बन गई है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का उपयोग जानकारी फैलाने, जागरूकता बढ़ाने और अभियान चलाने के लिए किया जाता है। हैशटैग, वायरल पोस्ट और ऑनलाइन याचिकाएँ लोगों को जोड़ने और वैश्विक आंदोलनों को उत्पन्न करने में मदद करती हैं।

What is global civil society? Discuss its philosophical roots.

वैश्विक नागरिक समाज क्या है ? इसके दार्शनिक मूल की विवेचना कीजिए।

Global Civil Society refers to the sphere of social life and organizations that exist between the individual and the state, transcending national borders. It is made up of non-governmental organizations, social movements, community groups, and other entities that advocate for common values, human rights, environmental protection, and justice on a global scale. This concept emphasizes cooperation, solidarity, and the collective efforts of individuals and organizations to address issues that affect people worldwide.

वैश्विक नागरिक समाज उस सामाजिक जीवन और संगठनों का क्षेत्र है जो व्यक्ति और राज्य के बीच अस्तित्व में होता है, और यह राष्ट्रीय सीमाओं को पार करता है। इसमें गैर-सरकारी संगठन, सामाजिक आंदोलन, समुदाय समूह और अन्य संस्थाएँ शामिल होती हैं, जो वैश्विक स्तर पर सामान्य मूल्यों, मानवाधिकारों, पर्यावरण संरक्षण और न्याय के लिए समर्थन करती हैं। यह अवधारणा सहयोग, एकजुटता और उन व्यक्तियों और संगठनों के सामूहिक प्रयासों को महत्व देती है जो उन मुद्दों का समाधान करने के लिए काम करते हैं जो दुनिया भर में लोगों को प्रभावित करते हैं।

Philosophical Roots of Global Civil Society

1. Enlightenment Thinkers (18th Century)

Philosophers like Immanuel Kant, John Locke, and Jean-Jacques Rousseau laid the foundation for modern civil society by emphasizing individual rights, freedom, and the idea of a social contract. They advocated for the protection of rights and freedoms that could transcend national boundaries, creating a universal moral order.

प्रकाशयुग के विचारक (18वीं शताब्दी)

इमैनुएल कांट, जॉन लॉक और जीन-जैक्स रूसो जैसे दार्शनिकों ने नागरिक समाज की आधुनिक अवधारणा की नींव रखी, जिसमें व्यक्तिगत अधिकारों, स्वतंत्रता और सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत को महत्व दिया गया। उन्होंने ऐसे अधिकारों और स्वतंत्रताओं की रक्षा की बात की, जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर सकें, और एक सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था का निर्माण कर सकें।

2. Kant's Idea of Cosmopolitanism

Immanuel Kant proposed the idea of "cosmopolitanism," which emphasizes the need for a world government that ensures peace, justice, and the protection of human rights for all individuals, regardless of their nationality. He believed in a global ethical community.

कांट का वैश्विकता का विचार

इमैनुएल कांट ने "वैश्विकता" का विचार प्रस्तुत किया, जो यह सुझाव देता है कि एक वैश्विक सरकार की आवश्यकता है, जो सभी व्यक्तियों के लिए शांति, न्याय और मानवाधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करें, चाहे उनका राष्ट्रीयता कुछ भी हो। उन्होंने एक वैश्विक नैतिक समुदाय में विश्वास किया।

3. Hegel's Concept of Ethical Life

Hegel argued that civil society is an essential part of ethical life, where individuals find their freedom and identity through participation in social institutions. He believed that a global civil society would allow individuals to recognize their shared humanity and rights beyond national identities.

हेगल का नैतिक जीवन का विचार

हेगल ने यह तर्क दिया कि नागरिक समाज नैतिक जीवन का एक आवश्यक हिस्सा है, जहाँ व्यक्ति सामाजिक संस्थाओं में भागीदारी के माध्यम से अपनी स्वतंत्रता और पहचान पाते हैं। उन्होंने यह विश्वास किया कि वैश्विक नागरिक समाज व्यक्तियों को राष्ट्रीय पहचान से परे अपनी साझा मानवता और अधिकारों को पहचानने का अवसर प्रदान करेगा।

4. The Role of Global Justice and Human Rights

The idea of global civil society is rooted in the concept of global justice, which emerged in response to issues such as inequality, oppression, and human rights abuses. Philosophers like John Rawls advocated for principles of justice that apply universally, beyond the borders of individual nations.

वैश्विक न्याय और मानवाधिकारों की भूमिका

वैश्विक नागरिक समाज का विचार वैश्विक न्याय के सिद्धांत पर आधारित है, जो असमानता, दमन और मानवाधिकारों के उल्लंघन जैसी समस्याओं के जवाब में उभरा। दार्शनिकों जैसे जॉन रॉवल्स ने न्याय के सिद्धांतों का समर्थन किया, जो व्यक्तिवादी देशों की सीमाओं से परे सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं।

5. Habermas and the Public Sphere

Jürgen Habermas introduced the concept of the "public sphere," a space where individuals can engage in rational discourse to address collective issues. For Habermas, a global public sphere is essential for the development of a global civil society, where people can discuss and act upon global issues collectively.

हैबरमास और सार्वजनिक क्षेत्र

जूरुगन हैबरमास ने "सार्वजनिक क्षेत्र" का विचार प्रस्तुत किया, जो एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ व्यक्ति सामूहिक मुद्दों को हल करने के लिए तार्किक चर्चा में भाग ले सकते हैं। हैबरमास के लिए, एक वैश्विक सार्वजनिक क्षेत्र वैश्विक नागरिक समाज के विकास के लिए आवश्यक है, जहाँ लोग वैश्विक मुद्दों पर सामूहिक रूप से चर्चा और कार्य कर सकें।

What is the debate on advanced capitalist state ? Explain.

उन्नत पूंजीवादी राज्य पर क्या विवाद है? व्याख्या कीजिए।

Debate on Advanced Capitalist State refers to the discussion about the nature, role, and consequences of capitalist states that are highly developed, both economically and politically. In such states, capitalist economies dominate, and the government plays a crucial role in regulating markets, providing social services, and maintaining order. However, the debate centers around the extent of state involvement, the balance between capitalism and social welfare, and the distribution of power and wealth.

उन्नत पूंजीवादी राज्य पर विवाद उस चर्चा को संदर्भित करता है जो अत्यधिक विकसित पूंजीवादी राज्यों के स्वभाव, भूमिका और परिणामों पर होती है। ऐसे राज्यों में पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएं प्रमुख होती हैं, और सरकार बाजारों को विनियमित करने, सामाजिक सेवाएं प्रदान करने और व्यवस्था बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, यह विवाद राज्य की भूमिका की सीमा, पूंजीवाद और सामाजिक कल्याण के बीच संतुलन, और शक्ति और संपत्ति के वितरण पर केंद्रित है।

Key Aspects of the Debate

1. State Intervention vs. Market Forces

One of the main debates is about how much the state should intervene in the economy. Some argue that the state should regulate and control markets to ensure social welfare and prevent inequality, while others believe that too much state intervention harms economic growth and individual freedom.

राज्य का हस्तक्षेप बनाम बाजार बल

मुख्य विवादों में से एक यह है कि राज्य को अर्थव्यवस्था में कितनी हस्तक्षेप करनी चाहिए। कुछ लोग तर्क करते हैं कि राज्य को बाजारों को नियंत्रित और विनियमित करना चाहिए ताकि सामाजिक कल्याण सुनिश्चित किया जा सके और असमानता को रोका जा सके, जबकि अन्य का मानना है कि राज्य का अत्यधिक हस्तक्षेप आर्थिक विकास और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को नुकसान पहुंचाता है।

2. Capitalism and Inequality

Critics of advanced capitalist states argue that capitalism inherently leads to inequality, with wealth concentrated in the hands of a few. They argue that the state should take more action to reduce economic disparities and ensure fair distribution of resources.

पूंजीवाद और असमानता

उन्नत पूंजीवादी राज्यों के आलोचक यह तर्क करते हैं कि पूंजीवाद स्वाभाविक रूप से असमानता की ओर ले जाता है, जहाँ धन कुछ लोगों के हाथों में संकेंद्रित हो जाता है। उनका कहना है कि राज्य को आर्थिक भेदभाव को कम करने और संसाधनों के उचित वितरण को सुनिश्चित करने के लिए अधिक कदम उठाने चाहिए।

3. Welfare State vs. Neoliberalism

There is a significant debate between the welfare state model, where the government provides a strong safety net for its citizens (healthcare, education, unemployment

benefits), and neoliberalism, which advocates for reduced state involvement in the economy, focusing on privatization, deregulation, and free markets.

कल्याणकारी राज्य बनाम नवउदारवाद

एक महत्वपूर्ण विवाद कल्याणकारी राज्य मॉडल के बीच है, जिसमें सरकार अपने नागरिकों के लिए मजबूत सुरक्षा जाल प्रदान करती है (स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, बेरोजगारी भत्ते), और नवउदारवाद के बीच, जो अर्थव्यवस्था में राज्य की संलिप्तता को कम करने की सलाह देता है, और निजीकरण, विनियमन को खत्म करने और मुक्त बाजारों पर जोर देता है।

4. Globalization and the State

In the age of globalization, the role of the state in managing its national economy becomes more complex. Global capitalism, multinational corporations, and international trade affect the policies of advanced capitalist states. Some argue that the state is losing control over its economy to global forces, while others believe that the state still has significant power to shape its future.

वैश्वीकरण और राज्य

वैश्वीकरण के युग में, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को प्रबंधित करने में राज्य की भूमिका और भी जटिल हो जाती है। वैश्विक पूंजीवाद, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उन्नत पूंजीवादी राज्यों की नीतियों को प्रभावित करते हैं। कुछ लोग यह तर्क करते हैं कि राज्य वैश्विक बलों के सामने अपनी अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण खो रहा है, जबकि अन्य का मानना है कि राज्य के पास अभी भी अपने भविष्य को आकार देने की महत्वपूर्ण शक्ति है।

5. Autonomy and Democracy

Another aspect of the debate is the relationship between democracy and capitalism. While advanced capitalist states often maintain democratic forms of government, critics argue that the capitalist system undermines true democracy by concentrating power in the hands of corporations and wealthy elites, leaving the general population with limited influence.

स्वायत्तता और लोकतंत्र

इस विवाद का एक और पहलू लोकतंत्र और पूंजीवाद के बीच संबंध है। जबकि उन्नत पूंजीवादी राज्य अक्सर लोकतांत्रिक रूपों में सरकार बनाए रखते हैं, आलोचक यह तर्क करते हैं कि पूंजीवादी प्रणाली वास्तव में लोकतंत्र को कमजोर करती है, क्योंकि यह शक्ति को कंपनियों और अमीरों के हाथों में संकेंद्रित कर देती है, और सामान्य जनता के पास सीमित प्रभाव रह जाता है।

Conclusion

The debate on the advanced capitalist state is complex and revolves around the balance between state intervention and market freedom, capitalism's tendency to increase inequality, and how the state can respond to globalization. It also questions whether the capitalist system can support true democratic values and whether the welfare state can be sustained in an increasingly globalized world.

निष्कर्ष

उन्नत पूंजीवादी राज्य पर विवाद जटिल है और यह राज्य हस्तक्षेप और बाजार स्वतंत्रता के बीच संतुलन,

पूँजीवाद की असमानता बढ़ाने की प्रवृत्ति, और राज्य वैश्वीकरण का जवाब कैसे दे सकता है, जैसे मुद्दों पर केंद्रित है। यह यह भी सवाल उठाता है कि क्या पूँजीवादी प्रणाली असली लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन कर सकती है और क्या कल्याणकारी राज्य को एक अधिक वैश्विकीकृत दुनिया में बनाए रखा जा सकता है।

Point out the nature of the relationship between state and civil society as advanced by Hegel.

हेगल के द्वारा उन्नत राज्य और नागरिक समाज के बीच संबंधों की प्रकृति को बताइए।

1. Civil Society: A Place for Individual Interests

For Hegel, **civil society** is where people pursue their personal interests. This includes work, family life, and social connections. In this space, people focus on their own needs and desires, like earning money, achieving success, and having personal freedom. However, this also creates problems, such as competition, inequality, and conflicts, because everyone has different goals and interests.

नागरिक समाज: व्यक्तिगत हितों का क्षेत्र

हेगल के अनुसार, **नागरिक समाज** वह जगह है जहाँ लोग अपने व्यक्तिगत हितों का पालन करते हैं। इसमें काम, पारिवारिक जीवन और सामाजिक संबंध शामिल हैं। इस क्षेत्र में लोग अपनी जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे पैसे कमाना, सफलता प्राप्त करना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त करना। लेकिन, इससे समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं, जैसे प्रतिस्पर्धा, असमानता और संघर्ष, क्योंकि सभी के लक्ष्य और हित अलग-अलग होते हैं।

2. The State: A Place for True Freedom

The **state**, for Hegel, is different from civil society. It represents a higher level of freedom, where people can live together in harmony. The state is not just about laws and government; it is about a collective life that includes everyone. In the state, people follow common laws that help them live together peacefully, and their individual interests are balanced with the needs of the whole society. The state brings together individual freedom and the well-being of everyone.

राज्य: सच्ची स्वतंत्रता का क्षेत्र

हेगल के लिए, **राज्य** नागरिक समाज से अलग है। यह स्वतंत्रता का एक उच्च स्तर है, जहाँ लोग मिलकर शांतिपूर्वक रहते हैं। राज्य केवल कानून और सरकार के बारे में नहीं है; यह एक सामूहिक जीवन है जिसमें सभी लोग शामिल होते हैं। राज्य में लोग सामान्य कानूनों का पालन करते हैं, जो उन्हें शांति से जीने में मदद करते हैं, और उनके व्यक्तिगत हितों को समाज की जरूरतों के साथ संतुलित किया जाता है। राज्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पूरे समाज की भलाई को एक साथ लाता है।

3. The Relationship Between the State and Civil Society

Hegel believes the relationship between the **state** and **civil society** is like a balance. Civil society provides space for personal freedom and individual goals, but it also has problems like inequality and conflict. The **state** solves these problems by creating rules and laws that bring everyone together and ensure everyone's rights are protected. The state helps balance personal freedom with the common good of society. So, the state and civil society depend on each other to create a fair and peaceful society.

राज्य और नागरिक समाज के बीच संबंध

हेगल मानते हैं कि राज्य और नागरिक समाज के बीच संबंध एक संतुलन जैसा है। नागरिक समाज व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यक्तिगत लक्ष्यों के लिए जगह प्रदान करता है, लेकिन इसमें असमानता और संघर्ष जैसी समस्याएँ भी होती हैं। **राज्य** इन समस्याओं को हल करता है, नियम और कानून बनाकर जो सभी को एक साथ लाते हैं और सबके अधिकारों की रक्षा करते हैं। राज्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समाज की सामान्य भलाई के बीच संतुलन स्थापित करने में मदद करता है। इसलिए, राज्य और नागरिक समाज एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं, ताकि एक निष्पक्ष और शांतिपूर्ण समाज बनाया जा सके।

Conclusion

In simple terms, Hegel sees **civil society** as a space where individuals pursue their personal goals, but it can lead to conflicts. The **state** is the place where these conflicts are resolved, and people's freedom is protected in a way that benefits society as a whole. The two are closely connected and depend on each other to create a just and free society.

निष्कर्ष

सरल शब्दों में, हेगल मानते हैं कि **नागरिक समाज** वह जगह है जहाँ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों का पालन करते हैं, लेकिन इससे संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। **राज्य** वह स्थान है जहाँ इन संघर्षों को हल किया जाता है, और लोगों की स्वतंत्रता ऐसी तरीके से संरक्षित की जाती है जो समाज की भलाई के लिए फायदेमंद हो। दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं और एक न्यायपूर्ण और स्वतंत्र समाज बनाने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।